ISSN : 2229-5550

नाट्यम् 89-90

अप्रैल-सितम्बर, 2019

विशाखदत्त विशेषाङ्क

नाट्यम् 89-90, अप्रैल-सितम्बर, 2019

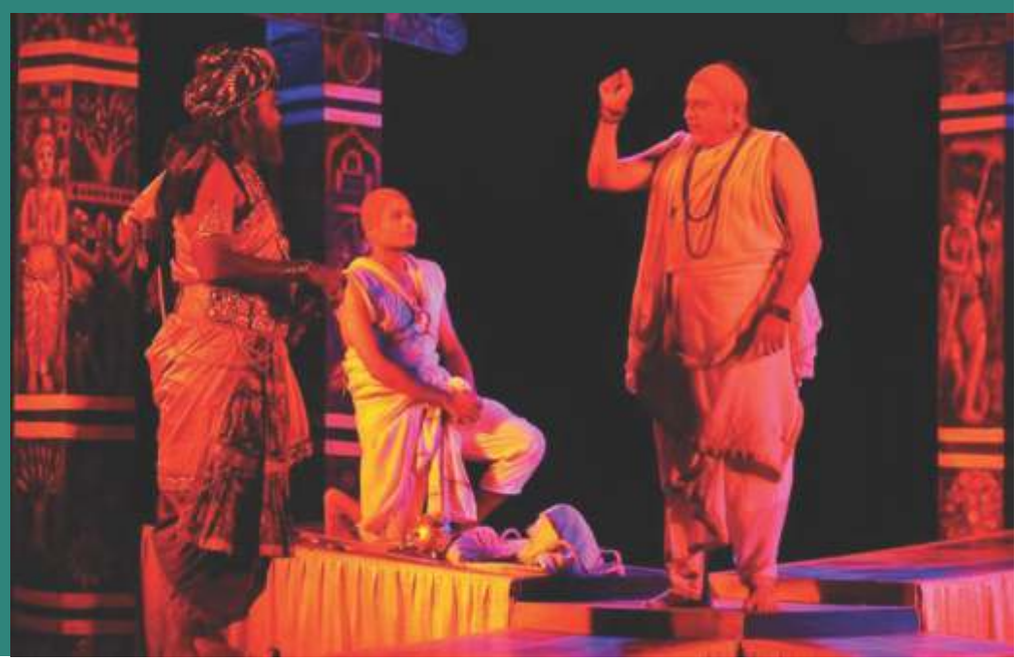

प्रकाशक
नाट्य परिषद, संस्कृत विभाग
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
सागर (म. प्र.) पिनकोड - 470003

विशाखदत्त प्रणीत मुद्राराक्षम्

समुत्खाता नन्दा नव हृदयशल्या इव भुवः
कृता मौर्ये लक्ष्मीः सरसि नलिनीव स्थिरपदा।
द्वयोः सारं तुल्यं द्वितयमभियुक्तेन मनसा
फलं कोपप्रीत्योर्द्विषिति च विभक्तं सुहृदि च।।

(अंक 1, श्लोक 13)

नौ नन्द पृथ्वी के हृदय में चुभती हुई कीलों के समान उखाड़ दिए गए हैं। चन्द्रगुप्त के लिए राज्यलक्ष्मी तालाब में कमलिनी के समान स्थिर पैर वाली कर दी गई है। क्रोध और प्रेम दोनों का दो प्रकार का फल न्यायपूर्वक बराबर-बराबर सावधान मन से शत्रु में और मित्र में बाँट दिया गया है।

विना वाहनहस्तिभ्यो मुच्यतां सर्वबन्धनम्।
पूर्णप्रतिज्ञेन मया केवलं बध्यते शिखा।। **(अंक 7, श्लोक 17)**

घोड़े और हाथियों के अतिरिक्त सबके बन्धन खोल दो। पूर्णप्रतिज्ञा वाले मेरे द्वारा केवल (अपनी) चोटी बाँधी जाती है।

राक्षसेन समं मैत्री राज्ये चारोपिता वयम्।
नन्दाश्चोन्मूलिताः सर्वे किं कर्त्तव्यमतः प्रियम्।। **(अंक 7, श्लोक 18)**

राक्षस के साथ मित्रता हो गई और हम राज्य पर प्रतिष्ठित कर दिए गए और सभी नन्दों को समूल नष्ट कर दिया गया। इससे अधिक प्रिय क्या किया जा सकता है।

संस्कृत परिषद्, संस्कृत विभाग
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

उपलब्ध नवीन पुस्तकें

- संस्कृत साहित्य की आधुनिक प्रवृत्तियाँ : सं. कुसुम भूरिया दत्ता, मू. 900/-
- संस्कृत के अभिनव रचनाधर्मी - आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी : सं. कुसुम भूरिया दत्ता, मू. 700/-
- दण्डी : समय और साहित्य : सञ्जय कुमार, मू. 350/-
- संस्कृत काव्यशास्त्र : आधुनिक आयाम : सं. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी, मू. 500/-
- ग्रन्थ-रत्न : रामरतन पाण्डेय, प्रदीप दुबे, मू. 100/-
- गीतधीवरम् : राधावल्लभ त्रिपाठी, मू. 50/-
- सौन्दर्य लहरी : सं. पुष्पा दीक्षित, मू. 40/-